भूगर्भ संरक्षण

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय राजस्थान

भूगर्भ का अर्थ है–पृथ्वी के अन्दर, पृथ्वी के गर्भ में अमूल्य सम्पदा। यह विषय पर्यावरण से भी जुड़ा हुआ है। पृथ्वी को माता कहा जाता है। पृथ्वी माता कहकर हम लोग इसकी पूजा करते हैं। बच्चा मॉ के गर्भ से उत्पन्न होता है वैसे ही पृथ्वी के गर्भ से अनेक सम्पदाएं उत्पन्न होती है। इसी आधार पर पृथ्वी को मॉ कहा जाता है। यह सृष्टि पंचभूतात्मक है। पृथ्वी, तेज, वायु, जल, आकाश ये पाँचों तत्त्व सृष्टि के निर्माण में योगदान करते हैं। जितने भी बहुमूल्य पदार्थ हैं वे सभी पृथ्वी के गर्भ में समाये हुए हैं। सोना, चॉदी, हीरा, मोती, अभ्रक जितने भी खनिज पदार्थ हैं वे सभी पृथ्वी के गर्भ में है। डीजल, पेट्रोल, जल सभी तत्त्व पृथ्वी से ही प्राप्त होते हैं। जल को जीवन कहा जाता है। जल स्वच्छ रूप से पृथ्वी के गर्भ में समाया रहता है। आजकल पृथ्वी का अंधाधुंध दोहन हो रहा है। इसका कारण यह है कि मानव आवश्यकता से अधिक लोभी हो गया है। उसकी आवश्यकताएं बढ़ राही हैं। इच्छाओं की पूर्ति कभी नहीं की जा सकती। यदि पृथ्वी का सम्पूर्ण धन सम्पत्ति किसी व्यक्ति को दे दी जाये तो भी उसकी इच्छा की पूर्ति नहीं की जा सकती। फैक्ट्रियों और उद्योग धन्धों के लिए कच्चे माल की आपूर्ति भूगर्भ से ही होती है। धीरे–धीरे पृथ्वी खोखली होती जा रही है। संगमरमर पत्थर, तांबे की खदानें, कोयले की बड़ी–बड़ी खदानें पृथ्वी को खोखला बना रही हैं। यदि पृथ्वी का इसी तरह से दोहन होता रहा तो पृथ्वी के गर्भ में स्थित खजाना खाली हो जायेगा। यदि भूगर्भ समाप्त हो जायेगा तो आने वाली पीढ़ी कैसे जीवनयापन करेगी। यह एक बहुत बड़ी समस्या है। इसलिए मनुष्य को अपनी आवश्यकताओं को कम करना पड़ेगा। इस कार्य को और कोई नहीं केवल मनुष्य ही कर रहा है। मनुष्य के अतिरिक्त जितने भी जीव हैं वे प्रकृति के साथ तादात्म स्थापित करके जीवनयापन करते हैं। वे पर्यावरण संरक्षण करते हैं। केवल मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो पर्यावरण को चारों तरफ से नुकसान पहुंचा रहा है। आज का मनुष्य मांसाहारी हो गया है। जंगलों में रहने वाले पशुओं का शिकार करके उनके मांस से

जीवनयापन कर रहा है। मानव की यह राक्षसी प्रवृत्ति है। जब मानव ही दानव बन जाये तो पृथ्वी का संरक्षण कौन करेगा। यह एक बहुत बड़ी समस्या है। जब तक इच्छा परिमाण नहीं होगा तब तक जंगलों को संरक्षण नहीं हो सकता।

बड़े–बड़े पहाड़ों को काटकर मैदान बना दिये जा रहे हैं। इससे पृथ्वी का संतुलन बिगड़ रहा है। नदियों को पाटकर के उसके अन्दर घर बना लिये जा रहे हैं। जिससे जल निर्गमन का स्रोत ही बन्द हो जा रहा है। नदी, पहाड़, वन, पशु–पक्षी सभी पृथ्वी के संतुलन को बनाते हैं। किन्तु मानव पृथ्वी के संतुलन को बिगाड़ रहा है। ऋग्वेद के प्रथम मंत्र 'अग्नि मीडे पुरोहितम्' आदि में ईश्वर के प्रत्यक्षरूप अग्नि की ही प्रार्थना की गयी है। गायत्री मंत्र में भी, जो भगवद् रूप महामंत्र है, इस तत्व के अधिष्ठाता सूर्य की ही उपासना हैं। यह सत्य है कि जो व्यक्ति सूर्य प्रकाश का जितना ही अधिक सेवन करेगा उसकी दिमागी शक्ति उतनी ही विकसित होगीं सूर्य प्रकाश के सेवन से मस्तिष्क में एक प्रकार की चुम्बकीय शक्ति आती है जो मनुष्य को बुद्धिमान बना देती है। हमारे पूर्वज मुनि–ऋषि इसी सूर्यो पासना की बदौलत बुद्धिमान बने जिनकी जोड़ का एक भी बुद्धिमान व्यक्ति भविष्य में अब पैदा होगा या नहीं, संदिग्ध ही है। अग्नि तत्व से हमें धन जन की प्राप्ति एवं रक्षा होती है। प्रलय–काल में सृष्टि जल में निमग्न होती हैं। सर्ग–काल में फिर जल से ही उसका उदय होता है। अर्थात्, सृष्टि के आरम्भ में भगवान की चेतना–शक्ति की प्रेरणा से क्रमशः आकाश, वायु तथा तेज (अग्नि) के प्रादुर्भाव होने के बाद रूप तन्मात्रमय तेज के विकृत होने पर उससे रस तन्मात्र होता है जिसमें जल तत्व की उत्पत्ति होती है।

सांसारिक जीवन का तो आरम्भ ही जल से हुआ है। जो वैज्ञानिक विकासवाद, पौराणिक अवतारवाद तथा औपनिषादिक सृष्टिवाद, तीनों से सिद्ध है। अतः इसी जल से हमारा पालन पोषण भी सम्भव है। बिना जल के हम जी नहीं सकते। अतः जल ही विष्णु है, हमारा पालनहार और रक्षक है वायु मण्डल वास्तव में वाष्प मण्डल है थोड़ी देर के लिए भी यदि जल का अंश वायु से खिंच जाये वायु, जल शून्य हो जाये तो यह भूमण्डल भी जीव शून्य हो जाये जल में सभी कुछ घुल जाता है नितान्त विशुद्ध जल में कांच तक घुल जाता है और तेल भी। सब जड़–चेतन वस्तुओं को धारण करने से इसे धरती, धरित्री, धरा कहते हैं। मुनष्य इसे

खोद–खाद करके और इस पर कचरा फैलाकर जो अपराध करते हैं, उन्हें क्षमा करने से इसे क्षमा कहते हैं। इसके गर्भ में कई रत्न और खनिज पदार्थ भरे रहने से इसे रत्नगर्भा, वसुधा, वसुन्धरा, वसुमती रत्न प्रसविनी आदि कहते हैं। इसके गर्भ से खाद्य पदार्थ पोषक तत्व ग्रहण करते हैं, जिन्हें खाकर हम स्वस्थ बनते हैं, इसलिए इसे रसा भी कहते हैं। विष के प्रभाव को नष्ट करने के कारण इसे अमृता भी कह सकते हैं। पृथ्वी, पंचतत्वों में पांचवां और अन्तिम तत्व है। यह अन्य चार तत्वों–आकाश, वायु, अग्नि तथा जल का रस है। जिन पांच तत्वों से हमारा शरीर बना है, मिट्टी तत्व उसमें सबसे अधिक प्रधान है। भूगर्भ में सभी प्रकार के खनिज स्थित हैं। यदि इनका उपयोग आवश्यकता के अनुसार किया जाये तो यह सनातन काल तक चलता रहेगा। इससे पर्यावरण भी सुरक्षित रहेगा और मानव को जीवनयापन करने के लिए सम्पदा मिलती रहेगी।